ISSN 2581-9917

जीवन सारथी

अशोक कुमार*

इस दुनिया में हम जब आते हैं तो हमारा परिवार ही सब कुछ होता है, पर समय के साथ जब हम आगे बढ़ते हैं तो हमें अपनी आवश्यकता के अनुसार समाज के साथ जुड़ने की प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है। इस दौरान जहां एक ओर हम समाज से अपने विकास के लिए योगदान लेते वहीं दूसरी ओर समाज के विकास में अपना योगदान देते भी हैं। इस प्रक्रिया में हमें समाज को समझने और परखने का अवसर मिलता है, समाज में विभिन्न प्रकार के व्यक्तियों से परिचय होता है।

उस समय समाज में हमें कुछ ऐसे व्यक्ति मिलते हैं जो स्वार्थी प्रवृत्ति के होते हैं, कुछ धोखेबाज होते हैं। इन सब से संघर्ष करते हुए हमें जीवन में आगे बढ़ते हुए प्रगति करनी होती है। अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए और अपनी मंजिल को प्राप्त करने के लिए हमें ऐसे लोगों से ना चाहते हुए भी संबंध रखने पड़ते हैं, विवशता के कारण व्यवहारिकता भी निभानी पड़ती है, क्योंकि यदि हम अपने अहंकार में ऐसे लोगों से संबंध तोड़ देंगें तो ऐसे में वे लोग तो अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर लेंगें, लेकिन हम अपनी मंजिल तक नही पहुंच पाऐंगे। अपनी मंजिल तक यदि हमें पहुंचना है तो समाज के ऐसे वर्गों का समाना करने की कला और विवेक हमें आना चाहिए, क्योंकि प्रगति और विकास के मार्ग पर इनका सामना हमें समय-समय पर करना ही पड़ेगा। यदि इन परिस्थितियों में हम हताश होकर बैठ गए तो हम सफलता से दूर होते जाएंगे। इसलिए यह जरूरी हो जाता है कि हमें समाज में इस तरह के लोगों से घबराने की आवश्यकता नहीं है अपितु इन लोगों पर अपने विवेक से विजय हासिल करने की क्षमता और शक्ति पैदा करनी चाहिए और निरंतर आगे बढ़ाने के संकल्प को बनाए रखना चाहिए, क्योंकि जीवन में ऐसे उतार चढ़ाव तो आते ही रहेगें।

समाज में यदि बाधा उत्पन्न करने वाले लोग हैं तो ऐसे लोग भी हैं जो निराशा के समय पर हमें उत्साहित करते हैं और संकट के समय सदा हमारे साथ होते हैं। अपने व्यक्तित्व से वे हमें नयी ऊर्जा प्राप्त करने में मदद करते हैं। लेकिन ऐसे लोग हमें तब ही मिलते है जब हम अपने परिवार व समाज के प्रति वफादार और अपने काम के प्रति ईमानदार व निष्ठावान होते हैं।

इस प्रकार के विशेष व्यक्ति जब हमें मिलते हैं तो धीरे-धीरे हमारा जीवन बदलने लगता है। इनके सम्पर्क में आने से हमारी सोच तो सकारात्मक होती ही है साथ ही साथ हमारा दिल और दिमाग सही निर्णय लेने में क्षमता प्राप्त करने में सफल होने लगता है। इन महानुभावों का हमारे जीवन पर ऐसा प्रभाव पड़ने लगता है कि हम अपने जीवन में परिवर्तन महसूस करने लगते हैं। ऐसा

* कार्यालय परिचालक
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय।

महसूस होने लगता है मानो हमारे सूने उपवन में सुगंध उत्पन्न होने लगी है। यह सुगंध हमारे आत्मविश्वास व संकल्प की होती है। अपने जीवन के सफर में जब हम कभी कभी निराश व हताश हो जाते हैं। तब इनका मार्गदर्शन और आशीर्वाद हमारी कठिनाइयों को सरल और पारदर्शी बना देता है। जिससे हमें अपनी मंजिल तक पहुंचने में अधिक समय नहीं लगता। वास्तव में ये हमारे जीवन में सारथी की तरह आते हैं जो हमारे विचलित मन को सही दिशा की ओर ले जाते हैं और हमें सही निर्णय लेने में भी सक्षम बनाते हैं।

समय के साथ आप एक और परिवर्तन महसूस करते हैं कि समाज में आप जैसे व्यक्ति भी हैं जिनके विचार और संघर्ष आपसे मिलते हैं। ऐसे व्यक्ति आपके मुश्किल सफर में हमसफर के रूप में आते हैं तो सफर आसान बन जाता है। ये विशेष व्यक्ति यदि आपकी उम्र से अधिक अनुभवी हों तो मान लीजिए आप बहुत ही सौभाग्यशाली हैं, क्योंकि यह व्यक्ति आप में अपने बच्चों का प्रतिबिम्ब देखते हैं, साथ ही जीवन के हर मोड़ पर हर परेशानी से आपको बचा लेने की क्षमता रखते हैं। ऐसे व्यक्ति आपका मार्गदर्शन करते हैं। इसलिए आपसे अनुरोध है कि ऐसे व्यक्ति के विश्वास को कभी न तोड़ें, उनकी भावनाओं का सदा सम्मान करें, उनका आशीर्वाद प्राप्त करें।

आपका दोनों में से जो संबंध या रिश्ता बनेगा यह संबंध बाकि संबंधों से अलग होगा यह रिश्ता आपसे कभी कुछ नहीं मांगेगा पर आप पर सब समर्पित करने को तैयार रहेगा। वास्तव में यही जीवन सारथी है, जीवन के सभी युद्धों में आपके लिए विजय मार्ग प्रशस्त करने वाले भगवान श्रीकृष्ण की तरह।

◈◈◈

धार्मिक पुस्तकें और मनुष्य

धार्मिक पुस्तकें हमें जीवन के विषय में बहुत कुछ सिखाती हैं, लेकिन आचरण हम कैसे करते हैं, यह हमारे ज्ञान और विवेक पर निर्भर करता है, क्योंकि केवल धार्मिक ग्रंथों को पढ़ने से या धार्मिक शिक्षा को प्राप्त करने से कोई बुद्धिमान हो जाए ऐसा सदा सम्भव नहीं है। धार्मिक विचारों, उपदेशों व शिक्षा को बिना आचरण व व्यवहार के जीवन में लाना वैसा ही है जैसा तोते के मुख में शब्दों को डालना।

इसलिए धार्मिक पुस्तकों के विचारों को पढ़कर, सही आचरण व व्यवहार के साथ जीवन में लाना चाहिए।

मेजर गुरदीप सिंह सामरा